International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-08-2020; Accepted: 10-08-2020; Published: 26-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 94-96

साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंध (आधार ग्रंथ – 'कामायनी')

भावना पाण्डेय
शोधार्थी, हिन्दी भाषा एवं विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
हमारा अन्तर्जीवन और उसका क्रम अपने बाह्य परिवेश और परिस्थिति से आवयविक सम्बन्ध रखता है, और दोनों – अन्तर तथा बाह्य–अंगांगिभाव से एकीभूत होकर हमारा जीवन बनाते हैं। और इसी अन्तर का निर्वहन स्त्री और पुरूष करता है। समाज रेत का वह ढेर नहीं जिसमें का प्रत्येक कण एक–दूसरे से घनिष्ठ सम्पर्क रखते हुए भी एक– दूसरे से विलग और स्वतन्त्र रहता है। समाज एक वृक्ष की भाँति है, जिसका प्रत्येक भाग, प्रत्येक अंश, प्रत्येक कण और प्रत्येक बिन्दु एक–दूसरे से और अपने पूर्ण अखण्ड से आवयविक सम्बन्ध रखता है। स्त्री–पुरूष का सम्बध इसी वृक्ष की भांति है जो एक दूसरे को छाया देती है। मानव–चेतना की प्रक्रियाएँ प्राणिशास्त्रीय आधार पर खड़ी होते हुए भी, मूलतः मनोवैज्ञानिक हैं, अर्थात् चेतना की प्रक्रियाओं के अर्न्तनियम प्राणिशास्त्रीय आधार पर स्थित होते हुए भी उससे भिन्न हैं। किन्तु चेतना के तत्व बाहा के आभ्यन्तरीकृत रूप हैं।

मूल शब्द: नित्यविलासी, अविर्भाव, सुसंयत, प्रणयवासना, उच्छृंखल, अंगांगिभाव, एकीभूत, अतीन्द्रिय, वायवी सौन्दर्य, मासलता, वर्णदीप्ति, सुडौलता, महाचिति, अप्रत्याशित

प्रस्तावना
कामायनी हिंदी भाषा का एक महाकाव्य है। इसके रचयिताजयशंकर प्रसाद हैं। यह आधुनिक छायावदी युग का सर्वोत्तम और प्रतिनिधि महाकाव्य है। प्रसाद जी की यह अंतिम काव्य रचना 1936 ई. में प्रकाशित हुई परंन्तु इसका प्रणयन प्रायः ज्ञात–आठ वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। 'चिंता' से प्रारंभ कर 'आनंद' तक 15 सर्गों के इस महाकाव्य में मानव मन की विविध अंतर्वृतियों का क्रमिक उन्मीलन इस कौशल से किया गया है कि मानव सृष्टि के आदि से अब तक के जीवन के मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास का इतिहास भी स्पष्ट हो जाता है। कला की दृष्टि से कामायनी छायावादी काव्यकला का सर्वोत्तम प्रतीक माना जा सकता है। चित्तवृत्तियों का कथानक के पात्र के रूप में अवतरण इस काव्य की अन्यतम विशेषता है। और इस दृष्टि से लज्जा, सौंदर्य, श्रद्धा और इड़ा का मानव रूप में अवतरण हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है।

मानव के अग्रजन्मा देव निश्चिंत जाति के जीव थे। किसी भी प्रकार की चिंता न होने के कारण वे 'चिर–किशोर–वय' तथा 'नित्यविलासी' देव आत्म–मंगल–उपासना में ही विभोर रहते थे। प्रकृति यह अतिचार सहन न कर सकी और उसने अपना प्रतिशोध लिया। भीषण जलप्लावन के परिणामस्वरूप देवसृष्टि का विनाश हुआ, केवल मनु जीवित बचे। देवसृष्टि के विध्वंस पर जिस मानव जाति का विकास हुआ उसके मूल में थी "चिंता" 'जिसके कारण वह जरा और मृत्यु का अनुभव करने को बाध्य हुई। चिंता के अतिरिक्त मनु में दैवी और आसुरी वृत्तियों का भी संघर्ष चल रहा था जिसके कारण उनमें एक ओर आशा, श्रद्धा, लज्जा और इड़ा का आविर्भाव हुआ तो दूसरी ओर कामवासना, ईर्षा और संघर्ष की भी भावना जगी। इन विरोधी वृत्तियों के निरंतर घात–प्रतिघात से मनु में निर्वेद जगा और श्रद्धा के पथप्रदर्शन से यही निर्वेद क्रमशः दर्शन और रहस्य का ज्ञान प्राप्त कर, अंत में आंनद की उपलब्धि का कारण बना। यह चिंता से आनंद तक मानव के मनौवैज्ञानिक विकास का क्रम है। साथ ही स्त्री–पुरूष के परस्पर सहयोग और प्रतिस्पर्धा का उल्लेख है। मानव के आखेटक रूप में प्रारंभ कर श्रद्धा के प्रभाव से पशुपालन, कृषक जीवन और इड़ा के सहयोग से सामाजिक और औद्योगिक क्रांति के रूप में भौतिक विकास एवं अंत में आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति का उद्योग मानव के सांस्कृतिक विकास के विविध सोपान हैं। इस प्रकार कामायनी मानव जाति के उदव और विकास की कहानी है।

प्रसाद ने इस काव्य के प्रधान पात्र 'मनु' और कामपुत्री कामायनी 'श्रद्धा' को ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में माना है, साथ ही जलप्लावन की घटना को भी एक ऐतिहासिक तथ्य स्वीकार किया है। शतपथ ब्राह्मण के प्रथम कांड के आठवें अध्याय से जलप्लावन संबंधी उल्लेखों का संकलन कर प्रसाद ने इस काव्य का कथानक निर्मित किया है, साथ ही उपनिषद् और पुराणों में मनु और श्रद्धा का जो रूपक दिया गया है, उन्होंने उसे भी अस्वीकार नहीं किया, वरन् कथानक को ऐसा स्वरूप प्रदान किया जिसमें मनु, श्रद्धा और इड़ा के रूपक की भी संगति भली भांति बैठ जाए। पंरतु सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर जान पड़ता है कि इन चरित्रों के रूपक का निर्वाह ही अधिक सुंदर और सुंसयत रूप में हुआ, ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में पूर्णतः एकांगी और व्यक्तित्वहीन हो गए हैं। स्त्री का पुरूष के उन्नति में सहयोग, बलिदान कामायनी के माध्यम से प्रसाद ने ऐतिहासिक रूप दे कर अग्रसित किया है। सुंदर रूप से स्त्री–पुरूष के संबंध का निर्वहन किया है।

कामायनी (1935 ई.) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित छायावादी महाकाव्य हैं जिसमें 15 सर्ग हैं। 'श्रद्धा' कामायनी का तीसरा सर्ग है। जबकि 'इड़ा' इसका नौवा सर्ग हैं। जल–प्रलय में देवसृष्टि नष्ट हो गई, मनु शेष बच गए। मनु ने हिमालय की एक निर्जन गुफा में अपना निवास बनाया। गांधार देश की युवती श्रद्धा ललित कलाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए हिमालय के प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन करती हुई घूम रही थी तभी उसे गुफा के समीप मनु चिन्तित मुद्रा में बैठे दिखाई दिए। श्रद्धा मनु से इनका परिचय पूछने लगी। श्रद्धा की मधुर वाणी सुनकर जब मनु ने अपनी दृष्टि ऊपर उठाई तो उन्हें अपने समक्ष एक अपूर्व सुन्दरी नवयुवती खड़ी दिखाई दी। प्रसाद जी ने यहां श्रद्धा के सौन्दर्य का छायावादी शैली में प्रभावपूर्ण चित्रण किया। मनु ने अपनी निराशा असहाय स्थिति के बारे में श्रद्धा को बताया और कहा मेरी जीवन पहेली के समान उलझा हुआ है श्रद्धा का मनु

को दार्शनिक रूप में समझाना एक स्त्री–पुरूष के संबंध को अवलोकित करता है। वे कहती हैं कि जटिलताओं से घबराकर मंगलमय काम शक्ति की उपेक्षा कर रहे हो जो उचित नहीं है। वह "महाचित" इस संसार में पांच प्रकार की लीलाएं करती हुई आनन्द कर रही हैं। अतः सृष्टि और प्रलय को उसकी लीला समझकर तुम्हें सामान्य रूप से स्वीकार कर लेना चाहिए। दुःख–सुख का चक्र जीवन में चलता रहता हैं। मनु ने कहा कि आपकी वाणी से मेरे मन में उत्साह संचार तो हुआ है किन्तु जीवन का अंतिम परिणाम निराशा ही है। श्रद्धा ने कहा कि देवसृष्टि नष्ट हो गई है। अब हम दोनों को मिलकर नवीन मानव सृष्टि का विकास करना हैं। अतः मैं अपने हृदय के समस्त कोमल भाव आपको समर्पित करती हूँ और यह मंगल कामना करती हूँ कि आपकी मानव सृष्टि पृथ्वी पर पूर्ण सफलता प्राप्त करें।

"कामायनी की नायिका श्रद्धा है जो कामगोत्रजा है इसलिए उसे 'कामायनी' भी कहा गया है।" "श्रद्धा 'हृदय' का प्रतीक माना गया है, जबकि मनु 'मन' के प्रतीक हैं।" और इड़ा बुद्धि की।

प्रस्तुत महाकाव्य श्रद्धा, इडा, मनु (स्त्री–पुरूष) किस प्रकार से एक स्त्री–पुरूष को जागरूक करती है। और अंत में उसमें लक्ष्य के प्रति प्रेरित करती है। एक अप्रत्याशित स्त्री–पुरूष के सामंजस्य में हृदय, मन और बुद्धि तीनों का मेल अतंमन्त आवश्यक है। तभी जीवन के संघर्षपूर्ण समस्याओं को सुलझाने में सफलता प्राप्त होती है। और यह सौभाग्य हमें साहित्य ही प्रदान करता है। उदाहरण है जिसके माध्यम से स्त्री–पुरूष को कैसे समझे कैसे सहयोग करे इड़ा, मनु, श्रद्धा तीन पात्रों के माध्यम से स्त्री–पुरूष के प्रेममय, भावपूर्ण, बुद्धिपूर्ण वकत्व्य को व्यक्त करती है –

कौन तुम संसृति जल निधि तीर,
तरंगों से फेंकी मणि एक।
कर रहे निर्जन का चुपचाप,
प्रभा की धारा से अभिषेक।।
मधुर विश्रांत और एकान्त,
जगत का सुलझा हुआ रहस्य।
एक करूणा सुन्दर मौन,
और चंचल मन का आलस्य।।
(आधुनिक हिन्दी काव्य) पृष्ठ – 7

प्रस्तुत पंक्ति में श्रद्धा मनु से बिल्कुल अपरिचित हैं। परंतु वह उन्हें इस विकल्प परिस्थिति में देख करके परेशान हो जाती है। और स्त्री की भावुकता ही थी कि मनु जैसा अडिग व्यक्ति अपने मन की व्यथा को श्रद्धा से बतलाने लगा और इतना ही नहीं उसकी मधुर वाणी सुनकर मनु के शिथिल शरीर में एक स्फूर्ति सी व्याप्त हो गई और शरीर की जड़ता समाप्त हो गई जैसे बिजली का झटका लगने से शरीर में अजीव सी अनुभूति होती है। वैसी ही नवचेतना उनके शरीर में व्याप्त हो गई। वे प्रसन्नतापूर्वक एवं विस्मय विमुग्ध होकर यह देखने लगे कि कौन है। जो इतनी मधुरवाणी में बोलकर संगीत की सृष्टि कर रहा है। वे अपने कौतूहल को शांत नहीं रख सके और यह देखने के लिए उत्सुक हो उठे कि कौन है जो मधुर वाणी में बोल रहा है।

स्त्री–पुरूष ही सम्पूर्ण संसार का रचनाकार है। भले ही कर्ता कोई और (ईश्वर) परंतु कर्म स्त्री पुरूष ही करता है जिससे इस दुनिया की सृष्टि होती है। कमायनी में भी प्रसाद को स्त्री–पुरूष का युगल जोड़ा इसलिए पात्र की कल्पना की, ताकि सृष्टि की प्रलय के बाद फिर से रचना हो सके और यह रचना करने की क्षमता स्त्री–पुरूष को प्राप्त है। इसलिए उन्होंने अपने पात्रों की कल्पना स्त्री–पुरूष को ही की है। एक स्त्री–पुरूष के संबंधों की क्षमता का उल्लेख शब्दों के माध्यम करना सम्भव नहीं है।

श्रद्धा सर्ग में जब श्रद्धा मनु से उनका परिचय पूंछा तो–मनु अपने जीवन की निराशा, अवसाद, लक्ष्यहीनता को छिपा न सके और अपने बारे में उसे बताने लगते हैं। इस प्रसंग का उल्लेख प्रसाद जी ने श्रद्धा सर्ग में अपनी पक्तियों के माध्यम से इस प्रकार कहा है कि –

कहा मनु ने नभे धरणी वीच,
बना जवीन रहस्य निरूपाय।
एक उल्का सा जलता भ्रांत।
शून्य में फिरता हूँ असहाय।।
शैल निर्झर ने बना हतभाग्य,
गल नहीं सका जो कि हिमखण्ड,
दौड़कर मिला न जलनिधि अंक
आह वैसा ही हूँ पाखण्ड।।

प्रस्तुत पंक्ति में मनु इतना निराश हैं कि, श्रद्धा से पूछने पर अपनी स्थिति का वर्णन बताते हुए कहते हैं कि, मेरी स्थिति के बारे में क्या कहूँ बस संक्षिप्त में इतना समझ लो कि मेरा जीवन एक रहस्य भरी हुई पहेली के समान नाना प्रकार की उलझनों से भरा हुआ है। जिन्हें सुलझा पाना मेरे लिए सम्भव नहीं है। अपनी स्थिति का परिचय देते हुए उपमा के माध्यम से व्यक्त करते हुए कहते हैं। मेरी स्थिति आकाश के उस जलते हुए उल्का पिण्ड के सदृश्य हैं। जो तीव्र ताप के लिए आकाश में इधर–उधर भटकता है। क्योंकि उसे गतंव्य लक्ष्य का कोई बोध नहीं होता।

भाव यह है कि मनु अपने जीवन को भार स्वरूप समझ रहे हैं उन्हें वेदना, दुःख एवं निराशा के कारण जीवन व्यर्थ लग रहा है। श्रद्धा (स्त्री) मनु (पुरूष) मनु जब प्रलय को देखकर उदास हो जाते हैं। तब श्रद्धा उन्हें दार्शनिक रूप से समझाने का प्रयत्न करती हैं। और कहती है कि जीवन से निराश मत हो वे मद में प्रसन्ता भरने का प्रयत्न करती हैं। इस प्रलय का अर्थ बतलाते हुए प्रकृति में अपने द्वारा उत्पन्न पाँच प्रकार के दुखों का वर्णन करती हैं कहती हैं कि –

जिस प्रलय ने तुम्हें इतना अधिक हताश कर दिया है। वह तो 'महाचिति' एक प्रकार की लीला है। सम्भवतः तुम नहीं जानते कि वह महाचिति इस संसार में पाँच प्रकार की लीलाएं करती हुई, आनन्द का अनुभव करती है। उसकी इन लीलाओं के नाम हैं। **सृष्टि, स्थिति, संहार, विलय और अनुग्रह**। उसे प्रत्येक लीला मैं आनन्द का अनुभव होता है चाहे वह सृष्टि की लीला हो या संहार की लीला।

इस कथन के माध्यम से यह पता चलता की स्त्री कितनी सरलता से एक पुरूष को समझाती है। पुरूष कैसे उसके वचनों को आत्मसात करता है। श्रद्धा मनु को समझाने का प्रयत्न विभिन्न प्रकार से करती है। वे कहती है कि –

"दुःख की पिछली रजनी बीच,
विकसता सुख का नवल प्रभात।
एक परदा यह झीना नील छिपाये है।
जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप गजगत की ज्वालाओं का मूल
ईश का वह रहस्य वरदान,
कभी मत इसको जाओ भूल" – आधुनिक हिन्दी काव्य पृष्ठ 9

मनु श्रद्धा को समझाती हुई कहती है कि जीवन में दुःख के उपरांत सुख का आगमन अवश्य होता है। दुःख तो परमात्मा का वरदान है। अतः उससे घबराना नहीं चाहिए। पंक्ति के माध्यम से श्रद्धा समझाते हुए कहती है। जैसे विभिन्न दुखों में सुख छिपा होता है। उसी प्रकार तुम्हारे भी दुख में सुख छिपा हुआ है। तुम्हें भी तभी शान्ति मिलेगी जब तुम्हारे जीवन में सुख का संचार

होगा।

श्रद्धा मनु को समझाते हुए उन्हें ही विजयी मानव का रूप बताने लगी और कहने लगी कि मनु तुम कुछ ऐसा करो प्रकृति गलतियों से सबक लेते हुए ऐसी मानव सृष्टि विकसित करनी है। जिसका इतिहास स्वर्णअक्षरों में लिखा जाए। और गृहस्थ जीवन व्यतीत करने लगे। कामायनी का नौवां सर्ग 'इड़ा' है। श्रद्धा और मनु गृहस्थ जीवन व्यतीत करने लगे थे तथा श्रद्धा गर्भवती हो चुकी थी मनु जंगली जानवरों का शिकार करते थे। श्रद्धा ने जब उन्हें इससे विगत करने का प्रयास किया तो वे श्रद्धा से रूठकर अपनी बसी बसाई गृहस्थी त्यागकर और उसे वहीं छोड़कर चले आए। भटकते हुए सारस्वत प्रदेश में पहुंचे जहां रानी इड़ा थीं। यह सारस्वत नदी के किनारे देवेश इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया था और असुरों को पराजित किया था। अतः मनु को सुरों एवं असुरों के संघर्ष का स्मरण हो आया। देव जाती स्वयं को सर्वोपरि समझती थी मनु को अब अनुभव हुआ कि वे श्रद्धा विहीन हैं और उन्होंने श्रद्धा को छोड़कर अच्छा काम नहीं किया वे सो गए और स्वप्न में उन्हें अच्छे काम की शाप ध्वनि सुनाई पड़ी कि तुमने श्रद्धा को त्याग कर अच्छा काम नहीं किया उसने तुम्हें सर्वस्व अर्पित किया था। तुम्हारा प्रजातंत्र द्वन्द एवं भेदभाव से भरा रहेगा।

प्रभात होने पर उन्हें एक अत्यंत सुन्दर रमणी, 'इड़ा' दिखाई दी जिसे देखकर उनकी निराशा दूर हो गई। उसने कहा मेरा नाम इड़ा है। मनु ने अपने विषय में बताया। इड़ा ने उनसे सारस्वत प्रदेश को समृद्ध बनाने का अनुरोध किया और कहा कि तुम विज्ञान के सहारे इस प्रदेश को उन्नत बनाओ। इड़ा की इस वाणी से मनु को नवीन स्फूर्ति का अनुभव हुआ और कहा कि तुम मेरे जीवन में उषा के समान उदित हुई हो।

इड़ा को प्रसाद जी ने बुद्धि का प्रतीक माना है। यह अन्तर्द्वन्द्व प्रधान सर्ग है। इसमें मनु के संघर्षपूर्ण जीवन का चित्र है। श्रद्धा विहीन मन भटकता फिरता है। और अंत में बुद्धि (इड़ा) का सहारा लेने को विवश होता है, पर उसे आनन्द प्राप्त नहीं होता यही कवि कहना चाहता है। मानव यही द्वंद्वों की समन्वय स्थिति ही सामरस्य है। प्रसाद ने हृदय और मस्तिष्क, भक्ति और ज्ञान, तप, संयम और प्रणय, प्रेम, इच्छा, ज्ञान और क्रिया सबके समन्वय पर बल दिया है। और अन्द्धन्द्धों के छड़ो में किस प्रकार एक स्त्री पुरूष का सामजस्य होता है। प्रसाद के कामायनी से ज्यादा हिन्दी साहित्य में और कहाँ होगा ? स्त्री पुरूष का संबंध चिर अमर एवं शाश्वत है।

निष्कर्ष

जीवनसत्य के रूप में कवि ने मानव जीवन में प्रेम की महत्ता घोषित की है। यह जगत कल्याणभूमि है, यही श्रद्धा की मूल स्थापना है। इस कल्याणभूमि में प्रेम ही एकमात्र श्रेय और प्रेय है। इसी प्रेम का संदेश देने के लिए कामायनी का अवतार हुआ है। प्रेम मानव और केवल मानव की विभूति है। मानवेत्तर प्राणी, चाहे वे चिरविलासी देव हों, चाहे देव और प्राण की पूजा में निरतअसुर, दैत्य और दानव हों, चाहे पशु हों, प्रेम की कला ओर महिमा वे नहीं जानते, प्रेम की प्रतिष्ठा केवल मानव ने की है। परंतु इस प्रेम में सामरस्य की आवश्यकता है। समरसता के अभाव में यह प्रेम उच्छृंखल प्रणयवासना का रूप ले लेता है। मनु के जीवन में इस सामरस्य के अभाव के कारण ही मानव प्रजा को काम का अभिशाप सहना पड़ रहा है। भेद–भाव, ऊँच–नीच की प्रवृत्ति, आडंबर और दंभ की दुर्भावना सब इसी सामरस्य के अभाव से उत्पन्न होती हैं, जिससे जीवन दुःखमय और अभिशापग्रस्त हो जाता है। कामायनी में इसी कारण समरसता का आग्रह है। यह समरसता द्वंद्व भावना में सामंजस्य उपस्थित करती है। संसार में द्वंद्वों का उद्रम शाश्वत तत्व हैं – "फूल के साथ काँटे," भाव के साथ अभाव, सुख के साथ दुःख और रात्रि के साथ दिन नित्य लगा ही रहता है। मानव इनमें अपनी रूचि के अनुसार एक को चुन लेता है, दूसरे को छोड़ देता है और यही उसके विषाद का कारण है। मानव के लिए दोनों को स्वीकार करना आवश्यक है, किसी एक को छोड़ देने से काम नहीं चलता। यही द्वंद्वों की समन्वय स्थिति ही सामरस्य हैं। प्रसाद ने हृदय और मस्तिष्क, भक्ति और ज्ञान, तप, संयम और प्रणय, प्रेम, इच्छा, ज्ञान और क्रिया सबके समन्वय पर बल दिया है।

कामायनी में प्रसाद जी ने नारी को जो सम्मान एवं गरिमा प्रदान की है। वह रीतिकालीन नारी को प्राप्त नहीं थी। वे कहते हैं, 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो', नारी गुणों की भण्डार है। दया, क्षमा, करूणा, स्नेह, ममता विश्वास जैसे गुण उसके हृदय रूपी रत्न कोष में भरे हैं। अपने इन्हीं गुणों के कारण वह श्रद्धा की पात्र है। प्रसाद जी ने स्त्री को भोग्या न मानकर पुरूष की प्रेरक शक्ति मानी है। जो निराशा के क्षणों में आशा का संचार करती है। प्रसाद ने स्त्री कामायनी में स्त्री के सूक्ष्म अतींद्रिय, वायवी सौन्दर्य चित्रण किया जिसमें ऐन्द्रिकता, स्थूलता एंव मांसलत का नितांत अभाव है। श्रद्धा का निर्माण फूलों के पराग, मकरन्द एवं सुगन्ध से हुआ जिसमें सौन्दर्य के सारे उपादान, गौरव पूर्ण क्रान्ति, वर्णदीप्त, सुड़ौलता, सामाजिक आदि विद्यमान है। नारी में ब्राह्म सौन्दर्य के साथ– हृदय की सुन्दरता का भी वर्णन किया है।

संदर्भ सूची

1. प्रसाद, जयशंकर, कामायनी, डायमण्ड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2006.
2. प्रसाद, जयशंकर, कामायनी, राजपाल, नई दिल्ली.
3. सिन्हा, रामलाल; कामायनी अनुशीलन
4. मदन इंद्रनाथ9 कामायनी – मूल्यांकन और मूल्यांकन
5. डॉ. प्रेमलता चसवाल, कामायनी : चिन्ता सर्ग, पी.पी. प्रकाशन
6. डॉ. उदय भानु सिंह; कामायनी लोचन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
7. कामायनी एक पूर्नविचार – मुक्तिबोध
8. कामायनी अध्ययन की समस्याएं – डॉ. नगेन्द्र
9. प्रसाद और कामायनी – डॉ. नगेन्द्र
10. कामायनी मनः सौन्दर्य की सामाजिक भूमिका – रमेश कुंतल मेघ
11. कामायनी का पूर्नमूल्यांकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी
12. प्रसाद ओर कामायनी का रचना संसार – डॉ. प्रेमशंकर